शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2013

मैक्यावली के स्ट्रेटजिक एवं सैन्य विचारों का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन

डॉ. लखनसिंह कुशरे
सहायक प्राध्यापक, सैन्य विज्ञान
शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

शोध संक्षेप

इटली के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, युद्धशास्त्री एवं कूटनीतिज्ञ निकोली मैक्यावली को प्रथम आधुनिक स्त्रातेजिक विचारक माना जाता है। जिसने अपनी पुस्तक (The Art of War –Arte della Guerra) में युद्ध के विषय में आधुनिक युद्ध की प्रकृति को स्पष्ट किया है। उनको समग्र युद्ध के सिद्धांत के बीजारोपण का श्रेय है। उन्होंने समकालीन परिस्थितियों के अनुसार जो विचार प्रस्तुत किये उनसे वर्तमान व्यवसायी राष्ट्रीय सेना तथा सैन्य कला का जन्म हुआ। मैक्यावली का जन्म 1469 को इटली के फ्लोरेंस नगर राज्य में हुआ था। यह वह समय था जब पूरे यूरोप में धार्मिक सुधार एवं पुनरोत्थान की लहर चल रही थी। इटली अनेक छोटे–छोटे स्वतंत्र नगर राज्यों में बंटा हुआ था। जिसमें वेनिस, नेपल्स गणराज्य, रोमन कैथोलिक क्षेत्र का, ऊंची ऑफ मिलान, जेनोआ, फ्लोरेंस आदि प्रमुख हैं। इटली के ये स्वतंत्र नगर राज्य आपस में परस्पर लड़ते रहते थे। तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं सुरक्षा व्यवस्थाओं का मैक्यावली पर गहरा प्रभाव पड़ा, जो उनकी कृतियों में परिलक्षित होता है। इस शोध पत्र के माध्यम से मैक्यावली के स्त्रातेजिक एवं सैन्य सम्बन्धी विचारों का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना–

मैक्यावली के राजनीतिक एवं कूटनीतिक विचारों की प्रासंगिकता एवं महत्व को स्वीकार कर क्रियान्वित किया जा चुका था। परन्तु उनके सैन्य विचारों को 18वीं शताब्दी से पूर्व कार्यान्वित नहीं किया जा सका। उनके विचारों का स्पष्ट स्वरुप एवं प्रभाव 19वीं शताब्दी में सामने आया। उन्होने स्त्रातेजी के सैनिक तत्वों के अलावा असैनिक तत्वों अर्थात राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी एवं मनोवैज्ञानिक में भी अपने विचार दिये हैं।[1] प्रो. डनिंग ने मैक्यावली के सम्बन्ध में लिखा है कि वह वास्तव में पूर्ण रुप से अपने युग का शिशु है।[2]

मैक्यावली के स्त्रातेजिक विचारों की विकास एवं पृष्ठभूमि को तब तक शायद हम अच्छी तरह से नहीं समझ सकते, जब तक तत्कालीन इटली एवं यूरोप के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक वातावरण एवं आर्थिक परिस्थितियों पर दृष्टिपात न किया जाये। उल्लेखनीय है कि किसी भी युग में युद्धकर्म की प्रकृति उस युग के सामाजिक और राजनीतिक पद्धतियों एवं व्यवहार से अलग नहीं हो सकती।

मध्य युग में दैवीय सिद्वांत को राज्य की उत्पत्ति का आधार माना जाता था। राजा ईश्वर के प्रतिनिधि के रुप में अपने दायित्वों का निर्वाह तथा धर्म की रक्षा के लिए ही राज्य पर शासन करता था ऐसा माना जाता था। राजकीय शूरमा अपने शौर्य के द्वारा युद्ध करके निर्बलों एवं असहायों की रक्षा करते थे। बारूद के अविष्कार के बाद राजकीय शूरमाओं के शौर्य का महत्व घटने लगा। जिससे इन शूरमाओं ने धन के बल पर किराये के व्यवसायी पैदल सैनिकों की भर्ती करने का काम ठेके पर करने लगे। राजा जिनकी मदद लेते थे। यह लोग युद्धाभियान के समय राज्य के लिए सैनिकों की आपूर्ति करते थे और धन कमाते थे। इस व्यवस्था का लाभ उठाकर दुष्ट प्रवृति के मनुष्य केवल

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2013

धन कमाने एवं लूट–मार के लिए सेना में भर्ती होने लगे।[3] यह सैनिक युद्ध में निर्णय न चाहकर इसे लम्बा करना चाहते थे जिससे उनकी नौकरियां बनी रहे और उन्हें आर्थिक लाभ होता रहे। किसी भी प्रकार की राष्ट्रीय भावना अथवा उच्च आदर्शों से विहीन इन धनलोलुप सैनिकों को कन्डोटरी सैनिक कहा जाता था।[4] इसलिए युद्ध में किसी भी प्रकार के संकट अथवा जीवन मरण से दूर रहते थे। इस युद्धकर्म को हम मध्यकालीन पतनोन्मुख युद्धकर्म की संज्ञा दे सकते हैं। कानून एवं न्यायविहीन नगर राज्यों का सामाजिक एवं नैतिक पतन हो चुका था। वस्तुतः अन्य सभी मध्यकालीन युद्धों की भांति ये युद्ध भी सीमित होते थे, परन्तु ये धार्मिक एवं नैतिक आधार पर सीमित नहीं थे। ये युद्ध व्यवसायिक सैनिकों के हितों तक ही सीमित थे।

मैक्यावली ने अपनी पुस्तक (Florentine History) में लिखा है कि जगोनारा की प्रसिद्ध लड़ाई में केवल दो सैनिक काम में आये थे जो अपने घोड़ों पर से गिर गये थे। सन् 1494 में चार्ल्स अष्टम के अन्तर्गत फ्रांसीसी सेना ने शक्तिशाली तोपों तथा स्वीट्जरलैंण्ड निवासियों की पैदल सेना की सहायता से फ्लोरेंस पर आक्रमण किया, तब फ्लोरेंस के ठेकेदारों की कन्डोटरी सेना मुकाबला करने के बजाये भाग खड़ी हुई, फ्लोरेंस में भारी मात्रा में लूटमार की गई। इस संघर्ष में पीसा का प्रसिद्ध बन्दरगाह भी फ्लोरेंस के हाथ से निकल गया, जिससे उसे प्रचुर व्यापारिक क्षति उठानी पड़ी।[5]

मैक्यावली पहला विचारक था जिसने सबसे पहले सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रभाव के फलस्वरुप युद्ध की प्रकृति एवं स्वरुप में पड़ने वाले प्रभाव के बारें में विस्तार से व्याख्या की है। उन्होंने स्वीकार किया कि तत्कालीन राज्यों की आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा के लिए एक नियमित स्थाई सेना की आवश्यकता है। यद्यपि उन्होंने अपनी कृति– (The Art of War) में राज्य एवं सैन्य संगठन के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की है।

शोध प्रविधि–

शोध पत्र तैयार करने हेतु पुस्तकालय विधि एवं विषय से जुड़े विद्वान मनीषीयों द्वारा समय–समय पर विभिन्न अवसरों पर लिखे गये शोध पत्रों की सहायता ली गई है।

मैक्यावली द्वारा प्रतिपादित प्रमुख स्त्रातेजिक एवं सैन्य विचार निम्नलिखित हैं–

राज्य एवं सैन्य संगठन–

किसी भी राज्य की शान्ति एवं सुरक्षा का आधार एक कुशल एवं दक्ष सैन्य संगठन होता है, जो अकस्मात निर्मित आन्तरिक एवं बाह्य बाधाओं का सफलतापूर्वक सामना कर सके। कई आलाचकों ने मैक्यावली के इस विचार की कटु आलोचना की। उनके सम्बन्ध में कहा गया कि शक्ति को सर्वोपरि रखकर राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक ध्येय प्राप्त करना उनका उद्देश्य था। यद्यपि सभी आलोचनाएं शनैः–शनैः निर्मूल साबित हुई। आधुनिक राज्यों के सुद्वढ़ राजनीतिक प्रशासनिक ढांचे तथा गणराज्यों की स्थापना का आधार एक सशक्त एवं अच्छा सैन्य संगठन ही है।

निर्णायक युद्ध का समर्थन–

तत्कालीन समय में राज्य की सुरक्षा के लिए ठेकेदारों द्वारा मुहैया कराये गये किराये की सेनाओं का प्रयोग किया जाता था। उनका किसी राजा की जय अथवा पराजय से कोई वास्ता नहीं था। इसलिए युद्ध को जितना सम्भव हो सके लम्बा व दीर्घकाल तक चलाना चाहते थे। जिससे उनको आर्थिक लाभ हो सके। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव राज्य के आर्थिक शोषण से था।[6] ऐसे उबाऊ एवं अनिर्णित युद्ध से बचने के लिए मैक्यावली ने संक्षिप्त परन्तु निर्णायक युद्ध की वकालत की।

समग्र युद्ध का सिद्धान्त–

अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'डिसकार्सेस ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री' में उसने लिखा है कि जहां राज्य की सुरक्षा एवं अस्तित्व का प्रश्न हो और निर्णय लेना अनिवार्य हो, तब इस निर्णय में न्याय और अन्याय, मानवता अथवा निर्दयता, शान एवं शर्म का विचार मस्तिष्क में नहीं आना चाहिए। राज्य में उपलब्ध सभी साधनों का उपयोग किसी भी प्रकार और किसी भी कीमत पर अनिवार्य हो जाता है।[7] मैक्यावली का मानना है कि राज्य के अस्तित्व की सुरक्षा के लिए सम्पूर्ण संसाधनों को झोंक देना ही श्रेयस्कर है। उन्होंने राज्य को एक सजीव वस्तु माना है। उनका कहना है कि– वास्तव में वह युद्ध जिसमें एक व्यक्ति दूसरे को न मारे, नगर न लूटे जायें, विशाल क्षेत्रों को उजाड़ न दिया जाये और जहां प्रवेश बेकार न हो, युद्ध नहीं है। युद्ध में राज्य के सम्पूर्ण साधन, समस्त शक्ति, बुद्धि एवं साहस काम में आते हैं।[8] समग्र युद्ध के सम्बन्ध में 19वीं सदी के विचारक क्लाजविट्स एवं जामिनी के स्त्रातेजिक संबन्धी विचार मैक्यावली के विचार से काफी हद तक मेल खाते हैं।

राष्ट्रीय स्वयं सेना–

मैक्यावली राज्य की सुरक्षा के लिए स्वयं के राज्य के नागरिकों से निर्मित स्थाई व्यवसायिक सैन्य संगठन के पक्षधर थे जिसे नेशनल मिलिशिया कहा गया है।[9] तत्कालीन फ्लोरेन्स राज्य की सुरक्षा के लिए राजा सोरेडेनी की अनुमति से उन्होंने अपने नेतृत्व में नगर के नागरिकों से निर्मित सेना का गठन किया था।[10] वस्तुतः 1498 से 1511 तक मैक्यावली को सैन्य नेतृत्व एवं सैन्य गठन का समय मिला, मेडोनी से 1511 ई. में फ्लोरेन्स को मिली पराजय के बाद मैक्यावली को नागरिक प्रशासन एवं अन्य दायित्वों से हटना पड़ा।[11] उनका मानना था कि युद्ध जैसे कार्य में जीवन एवं मरण का प्रश्न होता है जिसमें देशभक्ति एवं बलिदान की भावना के बिना रणक्षेत्र में विजयश्री प्राप्त करना दुष्कर कार्य है।

युद्ध की अनिवार्यता–

कतिपय विचारकों ने मैक्यावली की इस बात के लिए आलोचना की है कि उन्होंने राज्य के लिए युद्ध एवं संघर्ष को अनिवार्य बताया है।[12] उनके अनुसार युद्ध न होने अथवा काफी लम्बे समय तक युद्ध न होने से राज्य के नागरिकों में युद्ध के प्रति उदासीनता आ जाती है। राज्य के लिए हिंसा अथवा लड़ाई के स्थान पर नागरिक भौतिक सुख सुविधाओं के प्रति अधिक आकर्षित होने लगते हैं। सैनिक जैसे कार्य को गौण एवं उपेक्षित माना जाता है। तत्कालीन समय में स्थाई सेना एवं उसके संगठन तथा प्रशिक्षण जैसी कोई व्यवस्था राज्य में नहीं थीं, जिसमें सम्मिलित होकर नागरिक सैन्य सेवाओं जैसे कठोर कार्य के लिए अपने आप को तैयार करते। क्योंकि युद्ध में विजय के लिए गतिशीलता एवं उच्च मनोबल का होना अनिवार्य है।[13]

युद्ध का समाज से सम्बन्ध–

मैक्यावली का मानना था कि युद्ध का समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध है। युद्ध व्यक्तिगत नहीं, वरन सामाजिक महत्व का कार्य है। सैन्य संगठन एवं युद्धकर्म पर समकालीन समाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। इसलिए इन परिस्थितियों से युद्ध को पृथक करना सम्भव नहीं है। उनके अनुसार समाज और राज्य के लिए युद्ध अनिवार्य है, इससे बचना सम्भव नहीं। राजनीतिक संगठनों के विस्तार के लिए भी निर्णायक युद्ध जरुरी है।[14] वस्तुतः विकास के सभी पहलुओं के प्रभाव का प्रतिबिम्ब युद्धकर्म एवं सैन्य संगठन पर स्पष्ट पड़ता है।

अनिवार्य सैन्य सेवा का समर्थन–

फ्लोरेन्स के खेतिहर प्रदेश तस्कनी के निवासियों में से 18 से 30 वर्ष आयु के

नवयुवकों के लिए अनिवार्य सैन्य सेवा का श्रीगणेश किया। सैन्य भर्ती हेतु मैक्यावली ने स्वयं घोड़े पर सवार होकर तस्कनी के नवयुवकों में से ही सेना के लिए उपयुक्त युवाओं को भर्ती किया।[15] रविवार एवं अवकाश के दिनों में सैनिकों को सैन्य प्रस्थान विधि, अस्त्र बल्लम, बर्छी, प्रहार का सैन्य प्रशिक्षण देने के अलावा साल में दो बार इन सैनिकों की राजधानी में विशाल रैली में उच्च सैन्य संगठन एवं युद्धकला का प्रदर्शन किया जाता था। मैक्यावली द्वारा किये गये उपर्युक्त प्रयोग से सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए। मैक्यावली की देख रेख में लगभग 2000 सैनिकों की एक जनसेना पीसा की घेराबन्दी के लिए तैयार की गई और अन्ततः 1509 ई. में पीसा की सेना आत्म समर्पण को मजबूर हो गई थी। हालांकि 1511 ई. में मेडिसी साम्राज्य की विशाल सेना से फ्लोरेन्स की सेना को पराजय का सामना करना पड़ा। हालांकि फ्लोरेन्स की पराजय के पीछे सैनिक कारण के अलावा अन्य कई कारण भी जिम्मेदार हैं।

युद्ध में मनोवैज्ञानिक तत्व–

यद्यपि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में छल प्रपंच का प्रयोग घृणास्पद है, परन्तु युद्ध में इसका प्रयोग प्रशंसनीय तथा सफलतादायक है। यदि छल प्रपंच से सफलता प्राप्त की जा सकती है तो शक्ति का प्रयोग नहीं करना चाहिये।[16] मैक्यावली ने युद्ध में मनोवैज्ञानिक तत्वों के महत्व को स्वीकार किया हैं। उनका मानना है कि युद्ध के द्वारा लक्ष्य को प्राप्त करना अन्तिम व अनिवार्य होना चाहिये। युद्ध में हार एवं जीत के लिए बहुत–सी बातें उत्तरदायी होतीं हैं। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जिसमें एक बड़ी सेना को अपने से कहीं छोटी सैन्य संख्या वाली सेना से पराजित होना पड़ा। ऐसी लड़ाइयों के भाग्य के फैसले में मनोवैज्ञानिक तत्वों जैसे छल–कपट, जन प्रवाद, प्रचार आदि का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है।

मैक्यावली के युद्ध में मनोवैज्ञानिक तत्वों के प्रयोग सम्बन्धी विचार को पूर्णतः मौलिक नहीं कहा जा सकता है। उल्लेखनीय है कि भारत में लगभग 2300 साल पहले मौर्य साम्राज्य की आधारशीला रखने वाले महान आचार्य कौटिल्य एवं उसके शिष्य चन्द्रगुप्त ने तत्कालीन नन्द वंशों के विरुद्ध लड़ाई में छल–कपट, जन प्रवाद, झूठे प्रचार जैसे मनोवैज्ञानिक तत्वों के प्रयोग पर बल दिया था, जिसे कूट युद्ध की संज्ञा दी गई। इन मनोवैज्ञानिक तत्वों के प्रयोग से आशातीत सफलता भी मौर्यों को मिली, तब जबकि युद्ध में छल–कपट इत्यादि का प्रचलन नहीं था एवं इनके प्रयोग को उचित नहीं माना जाता था। फिर भी मैक्यावली द्वारा युद्ध में मनोवैज्ञानिक पहलुओं के प्रयोग सम्बन्ध विचार को इस संइर्भ में मौलिक कहा जा सकता है कि वो ऐसे पहले आधुनिक विचारक थे जिन्होंने व्यवस्थित ढंग से युद्ध में मनोवैज्ञानिक तत्वों के निर्णायक महत्व, प्रभाव, एवं समाज के संदर्भ में विस्तृत व्याख्या की।

सेना एवं धन का अन्तर्सम्बन्ध–

किसी भी देश को युद्ध में विजय आर्थिक समृद्धि से न मिलकर दक्ष सैनिकों से मिलती है। अतः राजनीतिक सत्ता का मूल आधार सैन्य शक्ति है, न कि आर्थिक क्षमता।[17] तत्कालीन नगर राज्यों के राज्याधक्ष व्यापारिक एवं सामन्तवादी तरीके से धन अर्जित कर भौतिक सुख सुविधाओं एवं भोग विलास में धन व्यय करते थे। राज्य की सुरक्षा उनकी पहली प्राथमिकता नहीं हुआ करती थी। ठेकेदारों की किराये के सैनिको के सहारे सुरक्षा एवं युद्ध जैसे कार्य सम्पन्न होते थे। मैक्यावली ने धन के महत्व को स्वीकार करते हुए ही सैन्य संगठन, प्रशिक्षण, अस्त्र–शस्त्र आदि में पर्याप्त धन लगाने हेतु अभिमत दिया

है। उनका स्पष्ट मानना है कि एक स्थिर एवं शक्तिशाली राज्य की प्राथमिक आवश्यकता मजबूत एवं सुदृढ़ सेना होती है, जो आन्तरिक व बाह्य चुनौतियों से सफलतापूर्वक मुकाबला कर सके। धन से ऐसी सेना की स्थापना की जा सकती है।

अस्त्र–शस्त्र, अनुशासन एवं प्रशिक्षण–

एक सैनिक एवं नागरिक के बीच मुख्यतः सबसे बड़ा फर्क अनुशासन का है। अनुशासन एक सशक्त सैन्य संगठन का आधार है। जिसकी स्थापना उच्च व कुशल प्रशिक्षण से होती है। एक सैनिक को अपने उच्च अधिकारी के आदेश के प्रति इतना अनुशासित होना चाहिए कि अपने प्राणों की परवाह किये बिना आदेश पालन के लिए सदैव तत्पर रहे।[18] उच्च प्रशिक्षण से ही सेना में अनुशासन, देशभक्ति की भावना, मनोबल जैसे मनोवैज्ञानिक तत्वों की की अभिवृद्धि की जा सकती है। शान्तिकाल में भविष्य के सम्भावित खतरे के लिए सेना एवं उसके अस्त्र–शस्त्र को हमेशा गतिशील एवं तैयार रखना चाहिए। शान्तिकाल में मिले उच्च कोटी के प्रशिक्षण, जिसमें छद्म युद्ध एवं अस्त्र–शस्त्र संचालन शामिल है, से सेना अकस्मात युद्ध के लिए तत्पर रहती है।

तोपखाना का महत्व–

मैक्यावली का मानना था कि युद्ध में बारूद और तोपखाने का प्रयोग महत्वपूर्ण है। यद्यपि अन्तिम निर्णायक विजय पैदल सैनिकों के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। यह कथन आज भी सत्य है। विजय प्राप्ति के लिए उत्तम तकनीक अथवा अभियन्ता की अपेक्षा साहसी तथा वीर सेनापति की आवश्यकता होती है।[19]

निष्कर्ष–

मैक्यावली बहुमुखी प्रतिभा का धनी था। उन्होंने जहां कुशल कूटनीतिज्ञ व राजनीतिज्ञ के रुप में नये आयाम स्थापित किये थे, वहीं एक उच्च आदर्श वाले सेना नायक की तरह सैनिक मामलों में भी यथार्थ के धरातल पर कार्य किया। स्त्रातेजिक विचारों को स्फुटित किया। नाश के स्त्रातेजी के सर्मथक मैक्यावली के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में तत्कालीन परिस्थितियों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। लगातार नगर राज्यों के बीच होने वाले परस्पर टकराव का प्रमुख कारण उन्होंने कुशल सैन्य संगठन की अनुपस्थिति, राज काज के मामलों में चर्च का अत्यधिक हस्तक्षेप, अक्षम राजनीतिक प्रशासनिक ढांचा एवं सामंतवादी व्यवस्था से उत्पन्न आर्थिक बदहाली को जिम्मेदार बताया है। इसमें संदेह नहीं कि उपरोक्त विचारों के कारण ही मैक्यावली को विश्व के प्रथम आधुनिक स्त्रातेजिक विचारक एवं पाश्चात्य देशों की आधुनिक सेनाओं का जनक कहा जाता है। मैक्यावली ही वह पहला व्यक्ति था जिसने तत्कालीन राजनीतिक संगठनों में समाज और युद्धकला के बीच परस्पर सम्बन्धों एवं सैनिक विचारों को वैज्ञानिक ढंग से सामने रखा। उसका मत था युद्ध समूचे राष्ट्र को मिलकर करना चाहिए और इसलिए युद्ध में विजय प्राप्ति का उद्देश्य भी राष्ट्र के लाभ हेतु होना चाहिए। अभी तक गौण समझे जाने वाले सैन्य विषय के महत्व को समाज एवं राज्य के समक्ष विश्लेषणात्मक तरीके से रखा। आज प्रत्येक सम्प्रभुत्व सम्पन्न राज्य की पहली आवश्यकता स्वयं की नागरिकों से निर्मित स्थायी सेना है। विश्व में स्वैच्छिक एवं अनिवार्य सैन्य सेवा के रुप में की आधारशिला निश्चित ही मैक्यावली के विचारों की देन है।

संदर्भ –

1. मालीवाल, बी.एन. –स्थल युद्ध कला, चन्द्र प्रकाश एण्ड ब्रादर्स, हापुड़, संस्करण 1998, पृष्ठ 74
2.जैन,श्रीमति पुष्पा –सम्पूर्ण सैन्य विज्ञान भाग–2, विश्वविद्यालय प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ–91
3. कुमार, योगेन्द्र व निगम, रामलाल –सैन्य विचारक, अलका प्रकाशन कानपुर, संस्करण प्रथम 1983, पृष्ठ–7.
4. पूर्वोक्त संदर्भ 1, पृष्ठ 75
5. पूर्वोक्त संदर्भ 2, पृष्ठ 92
6. पूर्वोक्त संदर्भ 3, पृष्ठ 7
7. पूर्वोक्त संदर्भ 1, पृष्ठ 75
8. पूर्वोक्त संदर्भ 2, पृष्ठ 92
9. सिंह, लल्लनजी – स्त्रातेजिक अध्ययन, प्रथम संस्करण 2001, प्रकाश बुक डिपो बरेली
10. पूर्वोक्त संदर्भ 2, पृष्ठ 92
11. सिंह, लल्लनजी – आधुनिक सैन्य विचारक, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, पंचम संस्करण 2002, पृष्ठ –99
12. पूर्वोक्त संदर्भ 10, पृष्ठ 99
13. पूर्वोक्त संदर्भ 2, पृष्ठ 92
14. पूर्वोक्त संदर्भ 2, पृष्ठ 92
15. पूर्वोक्त संदर्भ 1, पृष्ठ 75
16. पूर्वोक्त संदर्भ 3, पृष्ठ 8
17. पूर्वोक्त संदर्भ 3, पृष्ठ 12
18. पूर्वोक्त संदर्भ 10, पृष्ठ 102
19. पूर्वोक्त संदर्भ 10, पृष्ठ 102